B.A. History Hons, Part-I

Paper: I, Unit: III, Date: 15.07.2020

Session: सातवाहन काल की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक दशा

सातवाहन सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी हमें मुख्यतः अभिलेखों से होती है। इसके अलावा साहित्य, सिक्कों एवं सिक्कों से भी हमें मदद मिलती है। हमें उस समय की सभ्यता एवं संस्कृति का सुस्पष्ट चित्र प्राप्त हो जाता है,

राजनैतिक दशा: सम्राट का पद परम्परागत होता था, किन्तु सम्राट निरंकुश नहीं था। उसकी सत्ता पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए पाँच सभायें होती थीं। जनपद के लिए राज्यपाल होते थे। इसके अतिरिक्त साम्राज्य में अनेक गणराज्य, निकाय, ग्राम तथा श्रेणी होते थे जिनके पृथक-पृथक अधिकारी होते थे तथा ये सब अपनी आन्तरिक समस्याओं का समाधान करने में स्वतंत्र होते थे।

सेना चार भागों में विभाजित थी तथा उनका संगठन अच्छा था। नगरों को बड़ी दीवारों, परकोटों तथा दरवाजों द्वारा सुरक्षित रखा जाता था।

सामाजिक दशा: जाति प्रथा तथा जाति शुद्धता प्रचलित थी, जो हमें गौतमीपुत्र सातकर्णी के अभिलेखों से पता चलता है। हिन्दू समाज व्यवसाय के आधार पर चार वर्गों में विभाजित था। उच्च श्रेणी में महाभोज और महा-सेनापति आते थे, मध्य श्रेणी में अमात्य, महामात्र और भण्डागारिक आते थे तथा निम्न श्रेणी में लेखक, वैद्य, हालकीय (किसान), स्वर्णकार, गान्धिक, वर्धकी (बढ़ई), मालाकार, लोहवाणिक (लुहार) तथा दशक (मछुआ) आते थे।

संयुक्त परिवार प्रथा थी। कुटुम्ब के मुखिया का अपना महत्व होता था और उसे गृहपति या कुटुम्बिन कहा जाता था। सातवाहनों के समाज में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण रीति का प्रचलन दृष्टिगोचर होता है। माता के नाम पर सम्राट अपना नाम घोषित करते थे।

धार्मिक दशा: इस युग में ब्राह्मण धर्म बहुत फला-फूला। यज्ञों की बहुलता हुई। वैष्णव और शैव धर्मों का उदय हुआ। धार्मिक उदारता थी। बौद्ध एवं जैन भिक्षुओं को अनेक गुफायें दान दी गयीं। ये भिक्षु जनता को सदाचार की शिक्षा देते थे। लोगों को धार्मिक स्वतंत्रता थी। इस समय की मुख्य विशेषता यह थी कि अलग-अलग प्रकार के धर्म अंगीकार करने के बाद भी लोगों को अपनी जाति से वंचित नहीं होना पड़ता था। एक उषवदात नामक व्यक्ति ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया था परन्तु फिर भी वह ब्राह्मण ही कहलाता था।

साहित्य एवं कला: इस काल में साहित्य एवं कला को भी प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। प्राकृत भाषा को बढ़ावा दिया गया। गाथा सप्तशती, बृहत्कथा इस युग की रचनायें हैं। 'कातंत्र' भी इसी समय की कृति मानी गई है। इसके अतिरिक्त वैद्यक, ज्योतिष तथा ज्योतिष पर भी साहित्य लिखा गया। इस काल की बौद्ध कलाकृतियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। कई स्तूप तथा चैत्यगृहों का निर्माण इस समय हुआ। स्तूप में एक विशाल कमरा बना होता था तथा उसके चारों ओर छोटे-छोटे कमरे होते थे जिनमें एक-एक पत्थर की बेंच भिक्षुओं के शयन के लिए बनी होती थी। चैत्यगृह

द्वार और उसके चारों ओर संकीर्ण बरामदे होते थे तथा एक छोटा स्तूप भी होता था। भरहुत, सांची, अमरावती और नागार्जुनीकोण्ड में इस काल की कला के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत है।

मायनों में सातवाहनों का शासन प्रबंध मौर्यों के शासन प्रबन्ध से मिलता-जुलता था। सातवाहन काल में कुछ बातें जिनका विवरण सम्राट अशोक के अभिलेखों से हमें मिलता है। हम इस प्रकार पाते हैं कि सातवाहन प्रशासन मौर्य एवं गुप्त प्रशासकों तथा उत्तर एवं दक्षिण के बीच एक महत्वपूर्ण श्रृंखला है। सातवाहन राजाओं के युग में कला, संस्कृति, व्यापार इत्यादि की आशातीत प्रगति हुई।

आर्थिक जीवन लोगों की मुख्य जीविका तो अब भी खेती ही थी परन्तु आन्ध्रों के लम्बे और सुव्यवस्थित शासनकाल में उद्योग और व्यापार की बड़ी उन्नति हुई। बहुत से व्यवसायवालों ने अपनी-अपनी सामूहिक संस्थाएँ या श्रेणियाँ बना ली थी जैसे धान्यिक (अनाज के व्यवसायी) कुम्हार, कोलिक निकाय अथवा कोलिक (बुनकर) तिलपिषक (तेली), कासाकार, वंशकार (बाँस का काम करनेवाला) गाँधिक (इत्र बनानेवाले) आदि। देश के विभिन्न प्रदेशों और नगरों को मिलानेवाली सड़क और मार्ग बने हुए थे, जिनसे होकर व्यापार के रास्ते चलते थे और वस्तुओं का आदान-प्रदान होता था। दक्षिण भारत में पैठन नगर, नासिक, जुन्नार, कर्हाटक (करहाड) आदि नगर प्रसिद्ध व्यापार के केन्द्र थे। पश्चिम के देशों से व्यापार भी होता था। पश्चिमी तट के प्रसिद्ध बन्दरगाह भड़ौच, सोपारा, कल्याण आदि थे।

व्यापार क्रय-विक्रय और विनिमय के लिए कई प्रकार के सिक्कों का प्रचलन था। सबसे बड़ा सिक्का सुवर्ण था जो चाँदी के पैंतीस कार्षापण के बराबर होता था। उसके नीचे चाँदी के कुषण नाम का सिक्का था।

इस युग में वैदेशिक व्यापार की भी विशेष उन्नति हुई। मौर्य वंश के अन्तिम समय में भारत के उत्तर-पश्चिम में यवन राजाओं के साम्राज्य स्थापित हो गये थे। उन राज्यों के द्वारा पश्चिमी संसार से भारत का व्यापारिक सम्बन्ध और भी सुदृढ़ हो गया। भारतीय पश्चिमी सागर तट के व्यापारियों ने अरब देशों से मिस्र तक देशों से व्यापार करना आरम्भ कर दिया था। यही नहीं रोम के साथ भी भारत का व्यापार-सम्बन्ध उस युग में स्थापित था, क्योंकि उसी के फलस्वरूप हमें हजारा, रावलपिंडी, कन्नौज, मिर्जापुर, चुनार, इलाहाबाद आदि के समीपवर्ती स्थानों में हुई खुदाई में रोमन सिक्के उपलब्ध होते रहे हैं। यहाँ से हाथी-दाँत के सुन्दर एवं आकर्षक सामान, मोती, काली मिर्च, लौंग, मसाले, सुगन्धियाँ, औषधियाँ, रेशमी कपड़े तथा बारीक सुप्रसिद्ध मलमल काफी मात्रा में रोम भेजे जाते थे। मिस्र और रोम के अलावा बर्मा, सुमात्रा, जावा, चम्पा, चीन आदि देशों के साथ भी भारत का विदेशी व्यापार सुदृढ़ था।

डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग